अध्याय - 7

भवानीप्रसाद मिश्र का काव्य:- समन्वित अनुशीलन

भवानीप्रसाद मिश्र के काव्य का विस्तृत विवेचन करने के बाद उनके कृतित्व के संबंध में महत्वपूर्ण निष्कर्षों का सहज आकलन किया जा सकता है।

भवानीप्रसाद मिश्र काव्य संवेदनाओं के सफल कलाकार के रुप में आधुनिक हिंदी कवियों में सबसे अलग दिखायी देते है। भवानीप्रसाद मिश्र उन कवियों में अग्रगण्य हैं जिनकी कविताओं ने अपने पाठकों को नवीन संवेदना एवं नयी काव्य-भाषा के प्रति आश्वस्त किया है। . मिश्रजी उन विकासशील कवियों में से है जिन्होंने किसी वाद विशेष की परिधि में सीमित होकर अपनी काव्य रचना नहीं की है। वे किसी विचार विशेष को पकडकर आगे बढने में हामी नही है। भवानीप्रसाद मिश्रजी के मतानुसार--

"कविता में जब विचार विशेष का आग्रह प्रधान हो जाता है तो वह वाद बन जाता है। आग्रह केवल किसी बडी श्रध्दा के प्रति हो सकता है और एक बडी श्रध्दा का आग्रह व्यक्ति को दूसरी बडी श्रध्दा के प्रति आदर-भावना देता है, विशेष विरोध-भावना नहीं।"

भवानीप्रसाद मिश्रजी के काव्य मे मानवतावादी दृष्टि है। उनके काव्य में सामाजिक यथार्थ का सत्य चित्र उभरता हैं। मिश्रजी के काव्य पर गांधी-विचारों का प्रभाव है। उनके काव्य में प्राकृतिक दृश्यों का चित्रण अनुभूतिपरक और सूक्ष्म है।

भवानीप्रसाद मिश्र के व्यक्तित्व पर युगीन परिस्थितियों का, गांधी-विचार धारा का और प्राकृतिक परिवेश का गहरा प्रभाव है। भवानीप्रसाद मिश्र संवेदनशील व्यक्ति थें। उनका हृदय हमेशा स्नेह से भरा रहता था। उनके मन में त्रस्त मानवता के प्रति असीम करुणा है। उनके मन मे शोषण के प्रति आक्रोश है। वर्तमान स्थिति के प्रति उनके मन में खोज है तो भविष्य के प्रति उन्हें आस्था भी हैं।

भवानीप्रसाद मिश्र की विशेषता यह है कि वह किसी बौध्दिक तर्क के सहारे कविता नहीं रचते थें, बल्कि कविता उन्हें लिखवाती थी। पता नहीं चलता कि कब कविता शुरु हो गई अर्थात कविता से मिलना। भवानीप्रसाद स्वयं कहते थे--"कविता मेरे जीवन का विस्तार या संकोच नहीं है। दैन्य या पलायन नहीं है । वह मेरा अस्तित्व हैं।"

भवानीप्रसाद मिश्र की रचना-यात्रा सन् 1930 ई. ससे शुरु हुई। उनकी रचनाएँ पहली बार अज्ञेयजी द्वारा संपादित 'दूसरा सप्तक' सन् 1951 ई. में प्रकाशित हुओ। सन् 1956 में उनका पहला काव्यसंग्रह 'गीत फरोश' प्रकाशित हुआ। इसके अलावा उनके प्रमुख काव्य-संग्रह इस प्रकार है--'बुनी हुई रस्सीं, 'गांधी पंचशती,' 'चकित है दुःख,' 'व्यक्तिगत,' 'त्रिकालसंध्या,' 'अंधेरी कविताएँ,' 'परिवर्तन जिए'। उनका एक खंडकाव्य 'कालजयी' नाम से प्रकाशित हुआ है। अपनी इन कृतियों के माध्यम से उन्होंने आधुनिक हिंदी कविता को एक नई दिशा प्रदान की है।

भवानीप्रसाद मिश्र ने कविता लिखना तो बचपन में ही शुरु कर दिया था लेकिन उन्हें असली प्रेरणा तो पं. माखनलाल चतुर्वेदी से ही मिली। माखनलाल चतुर्वेदी के साथ रहने के कारण ही उनमें गांधीजी के पीछे चलने की महत्वाकाक्षा प्रबल हो गई।

कविता में व्यक्तित्व की सहज अभिव्यक्ति ही कवि भवानीप्रसाद मिश्र का साध्य है। अपने व्यक्तित्व का समग्रता में साक्षात्कार करना और उसको व्यक्त करने के लिए अपेक्षित माध्यम से संघर्ष करते रहना ही उनकी काव्य-साधना है। कवि भवानीप्रसाद मिश्र मानते हैं कि कविता किसी अनुभव की अभिव्यक्ति नहीं है, बल्कि अनुभव करने की एक प्रक्रिया है।

भवानीप्रसाद मिश्र की आस्थामयी दृष्टि उनके काव्य की बडी संपत्ति है जिसकी केंद्रिय चेतना है- मानवतावाद । कवि की सूक्ष्म दृष्टि युगीन संदर्भों तक ही नहीं है। वह जीवन बोध और आत्मबोध तक गई है।

भवानीप्रसाद मिश्र ने अपने काव्यों में उत्कृष्ट प्रकृतिचित्रण किया है। प्रकृति की हर वस्तु उनकी आत्मीय है। प्रकृति उन्हें वैचारिक भूमि प्रदान करती है। उनका प्राकृतिक दृश्यों का चित्रांकन रमणीक, अनुभूतिपरक और सूक्ष्म है। उन्होने अपने काव्य मे प्रकृति के प्रति अपना अनुराग व्यक्त किया है।

भवानीप्रसाद मिश्र जी ने अपनी अनेक रचनाओं में पारिवारिक स्नेहिल दृश्यों का सजीव चित्रण किया है। 'घर की याद' आज के विघटित परिवारों के लिए आदर्श है जो अपनत्व और ममता का जीता-जागता चित्र है। मिश्र जी की कुछ कविताओं में रोमांटिक संवेदना भी अभिव्यक्त हुई है। लेकिन वैयक्तिक प्रेमपरक संवेदनाएँ उदात्त भावभूमि पर अवस्थित है, क्योंकि सामाजिक चेतना और कवि दायित्व उनके साथ है। उदात्त प्रेम की स्निग्धता और पारिवारिक प्रणय के मोहक चित्र उनकी कविताओं का अभिन्न अंग बनकर प्रस्तुत हुये है। यह उनके काव्य विशेषता रही हैं।

भवानीप्रसाद मिश्रजी के काव्य की महत्वपूर्ण विशेषता है- व्यंग्य। व्यंग्य पूर्ण रचनाओ मे ' 'गीतफरोश' नामक रचना विशेष चर्चित है सूक्ष्म और सशक्त व्यंग्य इस रचना की विशेषता है। 'दैनिक' नामक कविता में उन्होने अमानवीय संस्कृति, असंतुलित अमर्यादित जीवन-स्थितियों पर तीखा व्यंग्य किया है।

मिश्रजी ने वैयक्तिक सुख दुःखात्मक अनुभूतियों का सूक्ष्मता से अपने काव्य में चित्रण किया है। उनकी रचनाओं मे वैयक्तिक अनुभूतियो की सहज अभिव्यक्ति हुई है।

भवानीप्रसाद मिश्र की रचनाओं में सामाजिक विषमता को पूरे तथ्यों के साथ व्यक्त किया है। 'गाँव' नामक उनकी कविता इस दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय है। इस रचना में करुणा और संवेदना के साथ ग्रामीण जन की दुर्दशा का यथार्थ चित्रण हुआ है। समाज की प्रगतिशील शक्तियों के साथ मिश्र जी की निरंतर सहानुभूति रही है। और उन्होंने अपने वैयक्तिक जीवन की तरह ही अपने ही काव्य में भी कभी बेईमानी, अत्याचार अथवा अन्याय के साथ समझौता नहीं किया। भवानीप्रसाद मिश्र को प्रगतिवादी कहने की अपेक्षा प्रगतिशील कहना अधिक मुक्तिसंगत होगा। प्रगतिशीलता एवं आशावादिता के बल पर कवि ने मानवता की सुविधाओं कल्पना अपने अनंत मधुमा' अथवा 'प्रकाश-सागर' रचनाओं मे की है।

समाज मे पूँजीपतियों, सामतों और शासकों द्वारा निम्नवर्ग पर अत्याचार हुए हैं इसका यथार्थ चित्रण उनकी रचनाओं में हुआ है। कवि ने किसानों, मजदूरों, और मध्यमवर्गीय मानवों की जिंदगी के अभावों, असफलताओं, संघर्ष और कुंठाओं का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है। विषमताओं और विसंगतियों चित्रण उनकी रचनाओं में चित्रित हुआ है। सत्ताधारी वर्ग हमेशा कलाकारों का

विरोधी रहा है। इस दृष्टि से मिश्र जी की 'सन्नाटा' नामक रचना उल्लेखनीय है।

आर्थिक विषमता का चित्रण मिश्र जी के काव्य की विशेषता है। उनकी रचनाओं में वर्ग वैषम्य का चित्रण मार्मिक ढंग से हुआ है। समाज में एक ओर वैभव संपन्न लोग है जो फैशन और आधुनिकता के नाम पर क्लबों में डांस करते हैं, सुरा-सुंदरी में डूबते है और दूसरी ओर वो लोग है जो दिन भर कठोर परिश्रम के बाद सोते हैं, उन्हें हम गिरा हुआ समझकर उसका उपहास करते है। इस दृष्टि से 'बुनी हुई रस्सी' काव्य-सग्रह की कुछ रचनाएँ इस दृष्टि से उल्लेखनीय है।

भवानीप्रसाद मिश्र जी ने विनाशकारी घटनाओं का भी चित्र अपनी रचनाओं में चित्रित किया है। मिश्र जी के मतानुसार हमें अहिंसा से काम लेना चाहिए। हमारा त्याग, और बलिदान हिंसा को खाक में मिला देगा। हिंसा पागलपन है, उसका उत्तर घृणा से नहीं, मुक्ति का त्यौहार मनाकर दिया जाए। जब चीन ने हिंदुस्थान पर हमला किया तो गांधीवादी कवि मिश्रने सोचा कि यदि हमने आजादी मिलते ही सारी सेनाएँ समाप्त कर दी होती हो अहिसा की सारी भीतरी-बाहरी शक्तियों को समेट लिया होता तो हम जरुर कामयाब होते। लेकिन अब तो हमें जितना बन सकेगा उतना मुसिबतो का सामना करना पडेगा। कवि भविष्य के प्रति आश्वस्त है कि युध्द का राक्षस मारा जायेगा। कवि ने केवल शब्दों का जाल नहीं फैलाया है। अपनी कथनी और करनी में एकरुपता लाने की चेष्टा की है। मिश्र जी की रचनाओं में बौध्दिक संतुलन है। वे दर्शन की बोझिल बाते नही कहते बल्कि एक सवेदनशील कवि के नाते जो मर्म को सहज स्पर्श करता है, उसे ही अभिव्यक्ति देते हैं। जीवन की भयावह विषमताएँ जीना दूभर किए हैं। ह्दय की कलुषताओ, शोषण की प्रवृत्तियो छलप्रपंचो के आघातों ने उत्पीडन और दैन्य की स्थिति पैदा कर दी है। कविने वर्तमान परिप्रेक्ष्य कर सही विश्लेषण अपनी रचनाओं में दिया है।

भवानीप्रसाद मिश्र जी के काव्य में सम सामायिक भाव-बोध और यथार्थ के चित्र भी मिलते है। समाज में नारी की जो स्थिति हैं उसका चित्रण हमें उनकी 'कई बार' रचना में मिलता है। नारी का वर्तमान जीवन सर्वत्र उलझने, चिंता, निराशा और खिन्नता से भरा हुआ है। फिर भी आधुनिक नारी अब मुश्किलों का मुकाबला कर अपनी मजील पर पहुँच जाती हैं। इसका यथार्थ चित्रण कवि की रचना में मिलता है, जो नारी के विकास होने में सहाय्यता कर सकता है।

भवानीप्रसाद मिश्र बाहर-भीतर समग्रत: भारतीय है। इस धरती पर जन्म लेनेवाले को वे भाग्यवान मानते हैं। अपने देश के प्रति अगाध प्रेम और श्रध्दा का यह ठोस प्रमाण है। उनकी अनेक रचनाओंमें इस तरह के भाव विद्यमान हैं। भवानीप्रसाद मिश्र के मन मे राजनीतिकता से कविता को बचने की भावना रही है। फिर भी उनकी कविता में सामाजिक चेतना के साथ-साथ राजनीतिक चेतना के स्वरों की प्रधानता भी है। राजनीतिक चेतना का दृष्टि से तो उनके काव्य में गांधीवादी चिंतन मुखरित हुआ है। मिश्र जो गाधीवादी आंदोलनों में पले और बढे हैं। इन्हीं संस्कारों की छाप से उनका संपूर्ण कवि-व्यक्तित्व रजित है। 'दो बाते' कविता 1934 ई. के भारत की पीडा को व्यक्त करती है। इस समग्र स्वाधीनता आंदोलन के नेता हैं-- गांधीजी। भवानीप्रसाद मिश्र की कविता मानो भारतीनुमा चिंतकों से कह रही हो कि गांधी जन-आंदोलन के ऐसे नेता थो जिन्होंने जनता को सक्रिय भी किया था और जगाया भी। गाधी पचशती' की अनेक कविताएँ गांधीजी संबधी तमाम शंकाओं-दुविधाओं का उत्तर देती जान पडती है।

मिश्र जी के व्यक्तित्व में आरंम्भ से ही क्रांतिकारी आग रहते हुए भी मार्क्सवादी विश्वासों के प्रति आस्था नही है। मार्क्सवाद का अनात्मवाद मिश्रजी जैसे व्यक्ति को तृप्त नहीं कर पाता। मिश्रजी मार्क्सवादियों के इस आक्षेप को मानने के लिए कभी भी तैयार नहीं हुए हैं कि गाधीजी ने हिंदू राष्ट्रीयता और हिंदू भारतीयता को संस्कृतिघाती रुप में प्रस्तुत किया है। मिश्रजी क्राति को मार्क्सवादी समाजवाद से तथा स्वतत्रता से न जोडकर गांधीवादी सामाजिक आंदोलन से जोडते है। मिश्रजी के लिए क्रांति और शाति एक ही सिक्के के दो पहलू रहे है। उन्होंने इनको परस्पर विरोधी कभी नही माना। बिना उथल-पुथल के तो न शांति संभव है और न क्रांति। शांतिपूर्ण क्रांति ही संतुलित पथ है। इस संदर्भ मे मिश्र जी की 'आशागीत' रचना विशेष उल्लेखनीय है। भवानीप्रसाद मिश्र को वही राजनीतिक दृष्टि स्वीकार्य है जिसमे मानवीयता हो।

भवानी प्रसाद मिश्र ने अपने काव्य मे गांधी- जीवन दर्शन की उत्कट अभिव्यक्ति की है। कवि अपने 'गांधी पंचशती काव्य संग्रह मे गांधी-विचार-दर्शन को अनेकों कोणों एव प्रतीकों से शब्द-मूर्त किया है। ऐसा लगता है कि कवि एक विस्मृत अमृतवाणी को गफलत में पडे देश को सुनाना चाहता है। इस काव्य-संग्रह की कविताओं से कवि का समग्र गांधी-विचार-दर्शन वाला बिम्ब एक बहुत बडे आधार को लेकर उभरता है। गांधी पंचशती में गांधीवादी दर्शन सहज काव्य रुप मे साकार हो उठा है। कवि ने इस काव्य संग्रह में गांधी पर कम और गांधीजी के

विचारों ज्यादा कविताएँ लिख डाली है। कवि ने गांधीजी के विचारों को शाश्वत माना है। प्रेमशक्ति, लोकशक्ति और सहअस्तित्व के सिध्दांत ही विश्व को संहारक स्थिति से बचाने में समर्थ होंगे। सारा देश जातीयता, प्रांतीयता, सांप्रदायिकता, भाषावादिता आदि शापों से दूषित हो उठेगा तब गांधीवाद प्रेम , अहिंसा, सत्य का क्रियात्मक रुप इस संसार को संबल प्रदान करेगा। 'गांधी पंचशती' की कविताओं का लक्ष्य मात्र गांधी या गांधी-विचार-दर्शन ही नहीं है बल्कि ये कविताएँ गांधी वातावरण को समेटे हुए है।

भवानीप्रसाद मिश्रजी बडे प्रतिभा-संपन्न कवि हैं। इनका प्रत्येक शिल्प नवीन एवं सार्थक है। उन्होंने शिल्पगत नवीनता को सहज अभिव्यक्ति के रुप में अपनाया हैं। उन्होंने अपने साहित्य मे कभी किसी की अनुकृति नही की। मिश्रजी के काव्य-भाषा की विशेषता यह रही कि उन्होंने बोलचाल की भाषा का प्रयोग अपने काव्य में किया। जिसे पाठक को पढने में या समझने में कठिनाई महसूस नहीं होती। मिश्रजी ने अपने काव्य में नये संदर्भ दिये हैं, यही उनके काव्य की खास विशेषता हैं। उन्होंने शब्द संयम और शब्दों के सही प्रयोग किये है। भवानीप्रसाद मिश्रजी ने तत्सम, तद्भव, विदेशी तथा मुहावरों एवं लोकोक्तियों का प्रयोग किया है। मिश्रजी के काव्य में सरलीकरण की प्रवृत्ति अधिक रही है। मिश्रजी के काव्य में संगीतात्मकता भाषागत विशेषता है। मिश्रजी की भाषा मे माधुर्य एव प्रसाद गुण की प्रधानता है। मिश्रजी नारी सौंदर्य, प्राकृतिक सौंदर्य, मानवीय करुणा के कवि हैं। यही कारण है कि उनकी भाषा में उक्त गुणों का प्रयोग कुशलता मिलता है।

भवानीप्रसाद मिश्रजी ने अपने काव्य में ज्यादातर सांस्कृतिक और प्राकृतिक प्रतीकों का ही अधिक प्रयोग किया है। इसके अलावा वैज्ञानिक प्रतीकों का भी प्रयोग उनके काव्य में प्रतीकों तभी प्रयोग किया जब उसकी जरुरत उन्हें महसूस हुई। इसके साथ उनके काव्य में बिंबों का भी प्रयोग हुआ है।

भवानीप्रसाद मिश्रजी ने अप्रस्तुत योजना में प्राकृतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, वैज्ञानिक उपमानों का प्रयोग अपने काव्य में किया है। छंद के क्षेत्र में तो उन्होंने अपनी अधिकतर रचनाएँ मुक्तछंद में लिख डाली है। सहजता उनके काव्यशिल्प की सबसे बडी विशेषता है। सहजता के कारण उनकी अनुभूति चौरस हो गई है। इसी सहजता के कारण उन्होंने आधुनिक हिंदी काव्य-भाषा को नया मुहावरा दिया है। कवि भवानीप्रसाद मिश्रजी के काव्य में 'यथार्थ जीवन-बोध' यही

काव्य-शिल्प हैं।

समकालीन कविता के परिप्रेक्ष्य में भवानीप्रसाद मिश्रजी अकेले ऐसे कवि हैं जो सहज भाषा में सच्ची सृजन क्षमता लिए, व्यापक अनुभूतियों को लेकर जनसामान्य तक आये हैं। जनता की हर व्यथा को वाणी देने में ही उनके कवि ने अपनी सार्थकता मानी है। शब्द को कर्म से जोडने में भवानीप्रसाद मिश्र का योगदान बहुत बडा है। मिश्रजी के काव्य में जो सहज खुलापन, गहरी संवेदना है। वे आधुनिक और नव्यतर चेतना के अकेले कवि हैं, जिन्होंने सही किस्म की कविता का जनता से सीधा साक्षात्कार कराया है।

समग्रतः में देखा जाएँ तो उनकी काव्य-साधना का मूल स्वर जागरण, ज्योति और गांधीवादी जीवन-दर्शन से ओतप्रोत रहा हैं, जिसमें शक्ति, संकल्प और बलिदान जैसे विचारों को आधार के रुप में ग्रहण किया गया है। निस्संदेह भवानीप्रसाद मिश्रजी का आधुनिक हिंदी काव्यधारा में श्रेष्ठ स्थान हैं। यदि उन्हें आधुनिक हिंदी काव्य के अक्षय नक्षत्र भी कहा जाय तो अतिशयोक्ति न होगी।

----------------------*